स्वर्णकाकः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कथा का सार: लोभ बनाम त्याग का फल

प्रश्न 1 (आसान). कथा का सार निकालने में हमें क्या पकड़ना है–घटनाओं का क्रम या संदेश?
उत्तर – संदेश, यानी घटनाओं के पीछे छिपा कारण-परिणाम।

प्रश्न 2 (आसान). लोभ का फल कहानी में कैसा बताया गया है?
उत्तर – लोभ का दुष्परिणाम (नुकसान/बिगाड़)।

प्रश्न 3 (आसान). त्याग/विवेक का फल कहानी में कैसा बताया गया है?
उत्तर – त्याग का सुपरिणाम (अच्छा परिणाम/सुधार)।

प्रश्न 4 (मध्यम). स्वर्णपक्षी कौआ इस कथा में किस तरह मदद करता है–क्यों?
उत्तर – कौआ कहानी के माध्यम से लोभ के दुष्परिणाम और त्याग के सुपरिणाम का संदेश स्पष्ट करता है।

प्रश्न 5 (कठिन). यदि किसी पात्र ने लोभ चुना होता, तो तुम कहानी में कौन-सा निष्कर्ष निकालते? और यदि त्याग चुना होता, तो कौन-सा निष्कर्ष?
उत्तर – लोभ चुना होता तो निष्कर्ष: दुष्परिणाम मिलते–नुकसान/परेशानी। त्याग चुना होता तो निष्कर्ष: सुपरिणाम मिलते–अच्छे हालात/लाभ।

» धन-रक्षा का आरम्भ: माता का आदेश और बालिका की सतर्कता

प्रश्न 6 (आसान). माता ने तण्डुलों के लिए किस तरह की बात कही/आदेश दिया?
उत्तर – तण्डुलों की खगों से रक्षा करने का आदेश दिया।

प्रश्न 7 (आसान). कौआ कब आता है–माता के आदेश के तुरंत बाद या कुछ समय बाद?
उत्तर – कुछ समय बाद।

प्रश्न 8 (मध्यम). बालिका रोने लगती है, फिर भी वह क्या करती है–सिर्फ डरती क्यों नहीं?
उत्तर – वह कौए को रोकने की कोशिश करती है और प्रार्थना करती है क्योंकि वह माता के आदेश का पालन कर रही होती है।

प्रश्न 9 (कठिन). कहानी में 'धन-रक्षा का आरम्भ' किस तरह दिखता है? दो कारण लिखो।
उत्तर – पहला: माता का आदेश (तण्डुलों की रक्षा)। दूसरा: बालिका की सतर्कता और आदेश का पालन करके कौए को रोकना/प्रार्थना करना।

» कौए की शर्तें और बालिका का मन: प्रार्थना व आश्वासन

प्रश्न 10 (आसान). कौआ बालिका से क्या कहता है–"मा शुचः" का अर्थ क्या होगा?
उत्तर – दुःख मत करो/घबराओ मत।

प्रश्न 11 (आसान). कौआ कौन-सा आश्वासन देता है?
उत्तर – तण्डुलमूल्य (तण्डुल का दाम/मूल्य) देगा।

प्रश्न 12 (मध्यम). कौआ की शर्त क्या है कि बालिका को कब और कहाँ आना है?
उत्तर – सूर्योदय से पहले गांव के बाहर पिप्पलवृक्ष के पास आना है।

प्रश्न 13 (कठिन). आश्वासन मिलने के बाद बालिका के मन और व्यवहार में क्या बदलाव दिखता है? (कारण सहित)
उत्तर – कौआ "मा शुचः" और "तण्डुलमूल्यं दास्यामि" जैसे आश्वासन देता है, इसलिए बालिका डर/घबराहट कम महसूस करती है, खुश होकर नींद तक नहीं लेती और सूर्योदय से पहले ही वहां पहुँच जाती है।

» सोपान से भोजन तक: आश्चर्य और सही निर्णय

प्रश्न 14 (आसान). कौआ ने बालिका से भोजन के लिए क्या पूछा?
उत्तर – स्वर्णस्थाली में भोजन करोगी, या रजतस्थाली, या ताम्रस्थाली?

प्रश्न 15 (आसान). बालिका ने अपनी स्थिति के अनुसार किस थाली में भोजन करने की बात कही?
उत्तर – ताम्रस्थाल्याम् (ताम्र/तांबे की थाली में)

प्रश्न 16 (मध्यम). बालिका के 'निर्धना' होने का निर्णय से क्या संबंध है?
उत्तर – वह अपनी गरीबी के अनुसार संतोषजनक और सही चयन करती है–चमक के मोह में नहीं जाती।

प्रश्न 17 (कठिन). आश्चर्य देखकर भी सही निर्णय क्यों जरूरी है? पाठ के आधार पर एक कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि चमक (स्वर्ण/रजत) देखकर लोभ बढ़ सकता है; पर सही निर्णय से संतुलन बना रहता है–इसीलिए बालिका ताम्र का चयन करती है।

» लोभिणी बालिका का अनुसरण और पतन

प्रश्न 18 (आसान). लोभिणी बालिका ने काक का रहस्य कैसे जाना?
उत्तर – ईर्ष्या/लोभ के कारण रहस्य जानकर।

प्रश्न 19 (आसान). लोभिणी बालिका काक से क्या माँगती है?
उत्तर – तण्डुलमूल्य (चावल का दाम) और सीढ़ी।

प्रश्न 20 (मध्यम). लोभिणी बालिका ने स्वर्णमय सोपान क्यों चाहा और उसका परिणाम क्या निकला?
उत्तर – उसने स्वर्ण की लालसा में स्वर्णमय सोपान चाहा, पर काक ने फिर भी ताम्रमय सोपान/भोजन दिया और आगे चलकर वह सबसे बड़ी मंजूषा ले बैठी।

प्रश्न 21 (कठिन). पतन तक पहुँचने वाली घटनाओं का सही क्रम लिखो (संक्षेप में)।
उत्तर – ईर्ष्या से काक का रहस्य जानना चावल रखकर वही तरीका अपनाना काक से तण्डुलमूल्य/सीढ़ी माँगना स्वर्णमय सोपान की माँग लोभ में सबसे बड़ी मंजूषा लेना मंजूषा खोलते ही कृष्णसर्प दिखना।

» क्त्वा/ल्यप् प्रत्यय: कब 'पढ़कर/जाकर' जैसा रूप बनता है

प्रश्न 22 (आसान). उपसर्ग नहीं है, 'पढ़कर' भाव बनाने के लिए कौन-सा प्रत्यय लगेगा?
उत्तर – क्त्वा (जैसे पठित्वा)

प्रश्न 23 (आसान). 'जाकर' भाव 'गम्' धातु से बनाते हैं और उपसर्ग नहीं है–तब कौन-सा प्रत्यय?
उत्तर – क्त्वा (जैसे गत्वा)

प्रश्न 24 (मध्यम). उपसर्ग लगा है (जैसे आ-, प्र-, अनु- आदि जैसे भाव धातु के साथ हैं) और '...कर के/..के बाद' वाला अर्थ चाहिए–'क्त्वा' या 'ल्यप्'?
उत्तर – ल्यप्

प्रश्न 25 (कठिन). वाक्य-भाव: '(उपसर्गयुक्त) तत्र जाने के बाद'–तुम्हें 'जाकर/आकर' जैसा कृत् रूप बनाना है। नियम बताओ कि रूप में कौन-सा प्रत्यय लगेगा और 'क्त्वा' कब नहीं लगेगा?

उत्तर – उपसर्गयुक्त स्थिति में 'ल्यप्' लगेगा; उपसर्ग हो तो 'क्त्वा' नहीं लगेगा।

» चित्/चन निपात: अनिश्चयवाचक शब्द बनाना

प्रश्न 26 (आसान). कः + चित् का अनिश्चयवाचक अर्थ क्या होगा?

उत्तर – कश्चित् = कोई

प्रश्न 27 (आसान). का + चन का रूप क्या होगा?

उत्तर – काचन

प्रश्न 28 (मध्यम). कः + चन को अनिश्चयवाचक सर्वनामपद की तरह कैसे समझोगे?

उत्तर – कश्चन का अर्थ 'कोई' है–नाम नहीं तय, इसलिए अनिश्चयवाचक सर्वनामपद।

प्रश्न 29 (कठिन). कभी-कभी वाला अनिश्चित अर्थ दिखाने के लिए 'अव्यय' में चित्/चन का उदाहरण कैसे बनता है? (एक उदाहरण लिखो)

उत्तर – कदाचित् (चित् के साथ अनिश्चितता वाला अव्यय-भाव)।

प्रश्न 30 (कठिन). काः + चित् का रूप और अर्थ क्या होगा?

उत्तर – काश्चित् = कुछ स्त्रियाँ (अनिश्चयवाचक)

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. स्वर्णपक्षी कौए की कहानी के आधार पर बताओ–अगर पात्र का फैसला लोभ से होता है, तो कहानी का संदेश क्या होगा? और अगर निर्णय त्याग/विवेक से हो, तो क्या संदेश निकलेगा?

› पहले पहचानो: पात्र का निर्णय 'लोभ' की तरफ है या 'त्याग/विवेक' की तरफ।
› अगर लोभ है, तो कहानी के अनुसार 'दुष्परिणाम' वाले परिणाम लिखो–यानी नुकसान/परेशानी बढ़ना।
› अगर त्याग/विवेक है, तो कहानी के अनुसार 'सुपरिणाम' वाले परिणाम लिखो–यानी अच्छे परिणाम/बेहतर हालात।
› अंत में निष्कर्ष एक पंक्ति में लिखो: लोभ का फल बुरा, त्याग का फल अच्छा।

उत्तर – लोभ से फैसला होगा तो लोभ के दुष्परिणाम मिलेंगे–नुकसान/परेशानी बढ़ेगी। त्याग/विवेक से फैसला होगा तो त्याग के सुपरिणाम मिलेंगे–अच्छे परिणाम/हालात सुधरेंगे।

उदाहरण 2. कहानी में माता तण्डुलों की रक्षा के लिए आदेश देती हैं। फिर कौआ आने पर बालिका क्या करती है, और उसका कारण क्या है?

› पहले माता तण्डुलों को रखकर बेटी को आदेश देती हैं कि 'खगों' से रक्षा करो।
› थोड़ा समय बाद एक विचित्र कौआ तण्डुलों के पास आता है।
› कौआ तण्डुलों को खाता है और हँसता है–बालिका को डर/चिंता होती है।
› पर बालिका माता के आदेश को याद रखकर उसे रोकने की कोशिश करती है और प्रार्थना करती है कि तण्डुल मत भक्षय।

उत्तर – बालिका सतर्क होकर कौए को तण्डुल खाने से रोकने की कोशिश करती है और प्रार्थना करती है कि तण्डुल मत खाओ–क्योंकि वह माता के आदेश का पालन कर रही होती है।

उदाहरण 3. कौए ने बालिका को क्या आश्वासन दिया और कौन-सी शर्त बताई? (पाठ के वाक्यों के अर्थ लिखो)

› आश्वासन वाला वाक्य ढूँढो: "अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि"
› उसका अर्थ लिखो: कौआ तण्डुल का मूल्य/दाम देने का वचन देता है
› शर्त वाला वाक्य ढूँढो: "सूर्योदयात्प्राग् ... पिप्पलवृक्षमनु त्वया आगन्तव्यम्"
› उसका अर्थ लिखो: सूर्योदय से पहले गांव से बाहर पिप्पलवृक्ष के पास बालिका को आना है
› घबराहट रोकने वाला वाक्य भी जोड़ो: "मा शुचः"

उत्तर – आश्वासन: "अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि" – कौआ कहता है कि वह तण्डुल का मूल्य/दाम देगा। शर्त: "सूर्योदयात्प्राग् ... पिप्पलवृक्षमनु त्वया आगन्तव्यम्" – सूर्योदय से पहले गांव से बाहर पिप्पलवृक्ष के पास बालिका को आना है। और वह "मा शुचः" कहकर बालिका की घबराहट रोकता है।

उदाहरण 4. कौआ बालिका से पूछता है कि वह किस थाली में भोजन करेगी—स्वर्ण, रजत या ताम्र। पाठ के अनुसार बालिका अपनी स्थिति के हिसाब से क्या निर्णय लेती है? सही संस्कृत उत्तर लिखो।

› कौए के प्रश्न को पहचानो: स्वर्णस्थाली/रजतस्थाली/ताम्रस्थाली में से चुनना
› बालिका की स्थिति समझो: वह निध्ेरना/गरीब है
› पाठ की पंक्ति खोजो: बालिका कहती है—"ताम्रस्थाल्याम् एव अहं निर्धना भोजनं करिष्यामि"

उत्तर – बालिका निर्णय लेती है: "ताम्रस्थाल्याम् एव अहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।"

उदाहरण 5. स्वर्णकाक की 'चाल' समझने के बाद लोभिणी बालिका ने किस कारण और किस क्रम में पतन पाया? 5 मुख्य बिंदु लिखो।

› ईर्ष्या/लोभ के कारण स्वर्णकाक का रहस्य जानना
› चावल/रखवाली वाला वही तरीका अपने घर में करना
› सुनियोजित लाभ के लिए काक से 'तण्डुलमूल्य' माँगना
› स्वर्ण की लालसा में 'स्वर्णमय सोपान' माँगना
› लोभ में सबसे बड़ी मंजूषा लेना और खोलते ही सर्प देखना

उत्तर – लोभिणी बालिका ने ईर्ष्या से काक का रहस्य जाना, वही तरीका अपनाया, 'तण्डुलमूल्य' माँगा, स्वर्ण की लालसा में स्वर्णमय सोपान की माँग की, और लोभवश सबसे बड़ी मंज़ूषा उठा कर खोलते ही उसमें भीषण कृष्णसर्प देख कर उसका पतन हुआ।

उदाहरण 6. संस्कृत में '(पिप्पलवृक्षमनु) जाकर' जैसे भाव बनाओ: धातु 'गम्' के साथ उपसर्ग 'आ' लगा हो, तो 'पढ़कर/जाकर' वाला रूप चुनना है—क्त्वा या ल्यप्?

› पहले पहचानो: '...जाकर' = गम् धातु से कृत् रूप चाहिए।
› अब देखो उपसर्ग है या नहीं: यहाँ 'आ' उपसर्ग लगा है।
› नियम लागू करो: उपसर्ग हो तो 'क्त्वा' नहीं, 'ल्यप्' लगता है।
› इसलिए 'गम्' से उपसर्ग वाले 'जाकर' भाव के लिए क्त्वा रूप नहीं लिया जाएगा; ल्यप् वाले ढांचे में जाना होगा।

उत्तर – उपसर्ग होने पर 'क्त्वा' नहीं बनेगा; 'ल्यप्' वाला रूप बनाना होगा (यानी '...जाकर/...आकर' वाला अर्थ ल्यप् से)।

उदाहरण 7. दिए गए शब्दों में से अनिश्चयवाचक बनाने के लिए सही निपात चुनो और रूप बनाओ: (i) 'कः' को अनिश्चयवाचक बनाओ 'कोई' अर्थ में। (ii) 'का' को 'कोई (स्त्री, एकवचन)' अर्थ में अनिश्चयवाचक बनाओ।

› पहचानो: 'कः' और 'का' प्रश्नवाचक शब्द हैं—इनमें चित्/चन जोड़ना सही रहेगा ताकि 'कोई' बने।
› (i) 'कः' में 'चन' जोड़ो तो पुस्तकानुसार 'कश्चन' बनता है, जिसका अर्थ 'कोई' है।
› वैकल्पिक रूप से (i) 'कः' में 'चित्' जोड़ो तो 'कश्चित्' बनता है, अर्थ 'कोई'।
› (ii) 'का' स्त्रीलिंग के 'कौन/कई' वाले प्रश्नवाचक रूप का आधार है, उसमें अनिश्चयवाचक के लिए पुस्तकानुसार 'चन' या 'चित्' लगाओ।
› 'का' + 'चन' = 'काचन' (कोई स्त्री), और 'का' + 'चित्' = 'काचित्' (कोई स्त्री)।

उत्तर – (i) कः + चन = कश्चन (कोई); कः + चित् = कश्चित् (कोई)। (ii) का + चन = काचन (कोई स्त्री); का + चित् = काचित् (कोई स्त्री)।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कथा-सार लिखते समय 'निर्णय (लोभ/त्याग) फल (दुष्परिणाम/सुपरिणाम)' जरूर लिखो।

- प्रश्न आए तो 'आदेश' और 'सतर्कता/प्रार्थना'–ये दो बिंदु जरूर लिखना।
- उत्तर लिखते समय आश्वासन (तण्डुलमूल्य) और शर्त (समय-स्थान) अलग-अलग जरूर लिखो।
- कौआ के प्रश्न और बालिका के उत्तर की पंक्ति याद रखें।
- प्रश्न में 'कारण-क्रम-परिणाम' लिखो: ईर्ष्या नकल स्वर्णलालसा बड़ी मंज़ूषा सर्प।
- कृत् प्रत्यय चुनते समय पहले उपसर्ग पहचानो–यही नंबरिंग की चाबी है।
- बनाते समय पहले वर्ग पहचानो–प्रश्नवाचक तो 'सर्वनामपद', अव्यय तो 'अव्यय'।

एक नज़र में रिवीज़न

› लोभ दुष्परिणाम, त्याग/विवेक सुपरिणाम

› माता का आदेश बालिका की सतर्कता कौए की रोकथाम

› - "मा शुचः" + "तण्डुलमूल्य" मन शांत, तय समय पर जाना

› चमक नहीं–स्थिति के अनुसार सही चयन: ताम्रस्थाल्याम्

› - लोभ: स्वर्ण चाहो, बड़ा बॉक्स लो, खतरा पाओ।

› - उपसर्ग? ल्यप्, नहीं तो क्त्वा

› - प्रश्नवाचक + चित्/चन = अनिश्चयवाचक (कोई/कुछ)